चांद जैसे मुखड़े पे बिंदिया सितारा

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

दोस्तों, वर्ष 1988 में दूरदर्शन पर बी आर चोपड़ा निर्देशित एक धारावाहिक प्रसारित हुआ था जिसने लोकप्रियता के कई रिकॉर्ड कायम किये. इस प्रसिद्ध धारावाहिक का संगीत भी काफ़ी सराहा गया और आज भी लोकप्रिय है. आप समझ ही गये होंगे हम बात कर रहे हैं दूरदर्शन के प्रसिद्ध धारावाहिक 'महाभारत' की . क्या आप जानते हैं कि इस महान धारावाहिक 'महाभारत' का यादगार संगीत किसने तैयार किया था? एक कम चर्चित मगर बहुत प्रतिभाशाली संगीतकार 'राज कमल' ने इस अद्भुत धारावाहिक का संगीत तैयार किया था. राज कमल हिंदी फिल्म संगीत के उन प्रतिभाशाली संगीतकारों में शुमार किये जाते हैं जिन्होंने अपनी मधुर, शास्त्रीय और भावपूर्ण धुनों से भारतीय सिनेमा और टेलीविज़न दोनों को समृद्ध किया. उनकी धुनों में भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत और सरल मेलोडी का सुंदर समन्वय दिखाई देता है.

राज कमल का जन्म राजस्थान के जोधपुर ज़िले के मथानिया गाँव में हुआ था. उनका मूल नाम दलपत था, जिसे बाद में उन्होंने बदलकर राज कमल रख लिया. बचपन से ही उन्हें संगीत का वातावरण मिला और आगे चलकर उन्होंने हिंदी फिल्म जगत में अपनी अलग पहचान बनाई. उनका फिल्मी सफर वर्ष 1971 की फ़िल्म 'दोस्त और दुश्मन' से शुरू हुआ और उसके बाद लगभग तीन दशकों तक उन्होंने फिल्मों तथा दूरदर्शन धारावाहिकों के लिए यादगार संगीत रचा. राजकमल के संगीत जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव था, वर्ष 1979 में आई ताराचंद बड़जात्या निर्मित फिल्म 'सावन को आने दो'. इस फिल्म में अरुण गोविल, ज़रीना वहाब, रीता भादुड़ी और अमरीश पुरी प्रमुख भूमिकाओं में थे. इस फिल्म का संगीत देने का सुनहरा अवसर राज कमल को मिला और इस फिल्म के संगीत ने राज कमल को घर-घर में पहचान दिला दी. इसके गीतों में ऐसी मधुरता और सादगी थी जो पहली बार सुनने पर ही सुनने वाले के दिल में उतर जाती थी. इस फिल्म के सभी गीत अत्यधिक लोकप्रिय हुए. 'सावन को आने दो', 'चाँद जैसे मुखड़े पे बिंदिया सितारा', 'तेरी तस्वीर को सीने से लगा रखा है', 'तुझे देखकर जगवाले पर यकीं नहीं क्यूँ क़र होगा', 'जानम जानम तेरा मेरा प्यार नया है', 'तेरे बिन सूना मोरे मन का मंदिर', 'गगन ये समझे चाँद सुखी है', 'पत्थर से शीशा' और 'बोले तो बाँसुरी कहीं बजती' जैसे यादगार गीतों ने उस दौर के संगीत-प्रेमियों को जैसे सम्मोहित सा कर दिया .

फ़िल्म 'सावन को आने दो' के अलावा राज कमल ने जिन फिल्मों में संगीत दिया, उनमें प्रमुख हैं—पायल की झंकार (1980), जज़्बात (1980), चश्मे बद्दूर (1981), कथा (1983), फुलवारी (1984), कानून मेरी मुट्ठी में (1984), सात साल बाद (1987), पुलिस स्टेशन (1997), साज (1998) आदि. इसके अलावा उन्होंने कुछ गुजराती, मलयालम फिल्मों और भक्ति भजनों में भी अपना संगीत दिया. फ़िल्म 'सावन को आने दो' के यादगार गीतों के अलावा राज कमल द्वारा संगीतबद्ध कुछ अन्य प्रमुख गीत हैं, 'कहां से आए बदरा' (चश्मे बददूर), 'काली घोड़ी द्वार खड़ी' (चश्मे बद्दूर), 'आँसू की आरती साँसों के फूल' (चश्मे बददूर), 'सुर बिन तान नहीं ' (पायल की झंकार), 'देखो कान्हा नहीं मानत बतियां' (पायल की झंकार), 'मैंने तुमसे कुछ नहीं माँगा' (कथा), 'तुम सुन्दर हो' (कथा), 'चंचल नैना मोहिनी चितवन' (फुलवारी), 'मैं हूँ तेरी अम्मा' (अम्मा), 'तकदीर से लड़ ना सके क़ोई (अम्मा) आदि.

इन गीतों को येसुदास, सुलक्षणा पंडित,जसपाल सिंह जैसे प्रतिष्ठित गायकों ने अपनी आवाज़ दी .राज कमल प्रत्येक गायक की गायन शैली को ध्यान में रखकर धुन तैयार करते थे. यही कारण था कि उनके गीत, गायकों की आवाज़ में स्वाभाविक रूप से खिल उठते थे. विशेष रूप से राज कमल और येसुदास की जोड़ी ने कई यादगार गीत

दिए . येसुदास की आवाज़ में शास्त्रीयता, गंभीरता और भावनात्मक गहराई थी तो राज कमल के पास भारतीय शास्त्रीय और लोक संगीत की गहरी समझ थी. ये बातें उनकी जोड़ी को अत्यंत प्रभावशाली बनाती है.'चाँद जैसे मुखड़े पे बिंदिया सितारा', 'तेरी तस्वीर को सीने से लगा रखा है', 'तुझे देखकर जगवाले पर', 'जानम जानम', 'तेरे बिन सूना मेरे मन का मंदिर' और 'बोले तो बाँसुरी कहीं बजती' जैसे गीत इस साझेदारी की स्वर्णिम मिसाल हैं .

राज कमल की धुनों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सरलता, मधुरता और भारतीयता थी. वे गीत की परिस्थिति और भाव के अनुरूप संगीत तैयार करते थे. उनकी रचनाओं में शास्त्रीय रागों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, लेकिन वे कभी भी जटिल नहीं लगतीं क्योंकि उनकी रचनाओं में शास्त्रीयता और लोकप्रियता के बीच एक संतुलन था . इसका उत्कृष्ट उदाहरण फिल्म 'चश्मे बद्दूर' (1981) के गीत 'कहाँ से आए बदरा' और 'काली घोड़ी द्वार खड़ी' हैं . ये गीत राज कमल की राग आधारित रचनाओं के उल्लेखनीय उदाहरण है. ये गीत दिखाते हैं कि राज कमल केवल फिल्मी संगीतकार नहीं थे साथ ही उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत का गहरा ज्ञान था और वे उसे कहानी तथा परिस्थिति के अनुरूप इस सहज रूप में प्रयोग करते थे कि आम श्रोता भी खुद को संगीत से जुड़ा महसूस करे. राजकमल द्वारा दूरदर्शन के प्रसिद्ध धारावाहिक 'महाभारत' (1988) के लिए तैयार किया गया संगीत और पृष्ठभूमि संगीत आज भी भारतीय टेलीविजन की सबसे यादगार संगीत प्रस्तुतियों में गिना जाता है.

'महाभारत' के लिए संगीत तैयार करना किसी सामान्य धारावाहिक के लिए संगीत देने जैसा साधारण कार्य नहीं था. धारावाहिक का विषय काफ़ी भव्यता लिये हुए था और पौराणिक महत्व का भी था जिसमें, धर्म, अधर्म, युद्ध, नीति, अनीति, राजनीति, परिवार, प्रेम, प्रतिशोध, त्याग, षड़यंत्र और आध्यात्मिकता सभी विषयों का समावेश था . ऐसे विविधता वाले विषयवस्तु में संगीत को दृश्य की गंभीरता के साथ-साथ इस अनूठे भारतीय महाकाव्य की गरिमा और भव्यता का भी ख्याल रखना था. राज कमल ने इस चुनौती को भारतीय संगीत के अपने ज्ञान और अपनी सांगीतिक संवेदना के द्वारा पूरा किया. 'महाभारत' में उन्हें वीरता, मित्रता, शत्रुता, करुणा, पीड़ा, उल्लास, तनाव, उन्माद, अवसाद जैसे अनेक भावों के लिए अलग-अलग प्रकार के संगीत का उपयोग करना पड़ा. यही कारण है कि उनका यह काम उनके फिल्मी संगीत से अलग होते हुए भी काफ़ी महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है. 'महाभारत' का संगीत आज भी इस धारावाहिक की पहचान का अभिन्न हिस्सा है. राज कमल ने और भी धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों वाले टेलीविजन कार्यक्रमों 'विष्णु पुराण', 'बहादुर शाह ज़फ़र', 'आपबीती', 'माँ शक्ति' आदि धारावाहिकों के लिए संगीत दिया. धारावाहिक 'बहादुर शाह ज़फ़र' में उन्होंने बहादुर शाह ज़फ़र की शायरी को संगीत के माध्यम से प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया जिसे महेंद्र कपूर सहित अन्य गायकों ने अपनी आवाज़ देकर यादगार बना दिया . इस तरह राज कमल ने फिल्म संगीत से आगे बढ़कर टेलीविजन के लिए भी एक विशिष्ट सांगीतिक भाषा विकसित की.

राज कमल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने कठिन शास्त्रीय संगीत को सीधे-सीधे प्रदर्शित करने के बजाय उसकी आत्मा को लोकप्रिय फिल्मी धुनों में ढाला. उनकी रचनाएँ सुनते हुए कहीं लोकगीतों की सादगी महसूस होती है, कहीं शास्त्रीय संगीत की गहराई और कहीं प्रेम की कोमलता. यही विविधता उन्हें अपने दौर के दूसरे संगीतकारों से अलग करती है. उनकी धुनों में भारतीय संस्कृति, शास्त्रीय परंपरा और भावनात्मक गहराई का अनूठा संगम मिलता है. उल्लेखनीय है कि राज कमल एक पार्श्व गायक भी थे, उन्होंने कई फ़िल्मी गीतों और महाभारत धारावाहिक में अपना स्वर दिया और साथ ही उन्होंने एक फ़िल्म 'ज़ख्मी हसीना' का निर्देशन भी किया . 1 सितंबर 2005 को अलजाइमर रोग के दौरान उनका देहांत हो गया. राज कमल भारतीय फिल्म संगीत के ऐसे रचनाकार थे जिन्होंने लोकप्रियता की दौड़ से अधिक संगीत की गुणवत्ता को महत्व दिया. यद्यपि राज कमल को अपने समकालीन बड़े संगीतकारों जैसी व्यावसायिक प्रसिद्धि नहीं मिली, फिर भी संगीत समीक्षक और रसिक उन्हें अत्यंत आदर की दृष्टि से देखते हैं, भारतीय फिल्म संगीत के इतिहास में उनका नाम एक संवेदनशील संगीतकार के रूप में सदैव सम्मानपूर्वक लिया जाएगा.

राज कमल हिंदी फिल्म संगीत की उस परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें धुन को गीत की आत्मा माना जाता था. आज जब संगीत निर्माण में तकनीक और आर्केस्ट्रा की भूमिका बढ़ गई है, राज कमल का संगीत हमें याद दिलाता है कि एक अच्छी धुन के लिए सबसे पहले संवेदनशील संगीतकार की आवश्यकता होती है और राजकमल निश्चित ही इस कसौटी पर खरे उतरते हैं. आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी, तब तक राजकमल जी के मधुर संगीत का आनंद लीजिये और खुश रहिये.

आमिर संग फिर फिल्म करना चाहती हैं प्रीति जिंटा

अभिनेत्री प्रीति जिंटा इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'बंटवारा 1947' के प्रचार में व्यस्त हैं. लंबे अंतराल के बाद बड़े पर्दे पर वापसी कर रहीं प्रीति के लिए यह दौर पुराने अनुभवों और नई शुरुआत का खूबसूरत मेल है. इसी बीच उनकी चर्चित फिल्म 'दिल चाहता है' के 25 साल पूरे होने ने उनकी फिल्मी यात्रा की कई पुरानी यादों को फिर से ताजा कर दिया है.

फरहान अख्तर के निर्देशन में बनी 'दिल चाहता है' अगस्त 2001 में रिलीज हुई थी. फिल्म ने दोस्ती और रिश्तों की कहानी को बिल्कुल अलग अंदाज में पर्दे पर पेश किया था. आमिर खान, सैफ अली खान और अक्षय खन्ना की तिकड़ी के साथ प्रीति जिंटा की भूमिका भी दर्शकों को खूब पसंद आई थी. यही वजह है कि फिल्म के 25 साल पूरे होने पर भी इसका जिक्र उसी उत्साह के साथ किया जा रहा है.

इस खास मौके पर फिल्म से जुड़े कलाकारों की पुरानी यादें भी चर्चा में हैं. हालांकि, प्रीति जिंटा फिल्म की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर हुए पुनर्मिलन का हिस्सा नहीं बन सकीं. वह अपनी आगामी फिल्म के प्रचार में व्यस्त थीं. इसके बावजूद अभिनेत्री ने फिल्म और उससे जुड़े अपने अनुभवों को याद किया और उस दौर की खास बातों को प्रशंसकों के साथ साझा किया. सबसे ज्यादा ध्यान खींचने वाली बात प्रीति की आमिर खान के साथ दोबारा काम करने की इच्छा है. 'दिल चाहता है' में दोनों की जोड़ी को दर्शकों ने पसंद किया था. अब 25 साल बाद प्रीति ने आमिर के साथ फिर से पर्दे पर आने की इच्छा जताई है. उनकी इस बात ने उन प्रशंसकों की उम्मीदें बढ़ा दी हैं, जो दोनों कलाकारों को दोबारा एक साथ देखना चाहते हैं. प्रीति जिंटा की फिल्मी यात्रा में कई यादगार फिल्में शामिल हैं. अपनी अलग अभिनय शैली, सहज अंदाज और दमदार स्क्रीन उपस्थिति के कारण उन्होंने हिंदी सिनेमा में खास पहचान बनाई. लंबे समय बाद उनकी वापसी इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रशंसक उन्हें फिर से बड़े पर्दे पर देखने के लिए उत्साहित हैं.

श्रीदेवी के शानदार अभिनय से अब भी मंत्रमुग्ध दर्शक

बॉलीवुड में श्रीदेवी का नाम ऐसी स्टार अभिनेत्री के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने अपने दमदार अभिनय और दिलकश अदाओं से दर्शकों के दिलों में खास पहचान बनाई. श्रीदेवी का मूल नाम श्रीयम्मा यंगर था. उनका जन्म 13 अगस्त 1963 को तमिलनाडु के मीनमपट्टी गांव में हुआ था. उन्होंने महज चार वर्ष की उम्र में एक तमिल फिल्म से अपने सिने करियर की शुरुआत की. वर्ष 1976 तक उन्होंने कई दक्षिण भारतीय फिल्मों में बाल कलाकार के रूप में काम किया. बतौर अभिनेत्री उन्होंने तमिल फिल्म 'मुंदरू मुदिची' से करियर की शुरुआत की. वर्ष 1977 में प्रदर्शित तमिल फिल्म '16 भयानिथनिले' की व्यावसायिक सफलता के बाद श्रीदेवी स्टार अभिनेत्री बन गईं.

हिंदी फिल्मों में श्रीदेवी ने वर्ष 1979 में प्रदर्शित 'सोलहवां सावन' से बतौर अभिनेत्री कदम रखा. फिल्म असफल रही और इसके बाद उन्होंने दक्षिण भारतीय फिल्मों का रुख कर लिया. वर्ष 1983 में 'हिम्मतवाला' के जरिये उन्होंने एक बार फिर हिंदी सिनेमा में वापसी की. फिल्म की सफलता के साथ ही वह हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहीं. इसी वर्ष उनकी फिल्म 'सदमा' भी प्रदर्शित हुई.

फिल्म भले ही टिकट खिड़की पर सफल नहीं रही, लेकिन श्रीदेवी के अभिनय को आज भी उनके करियर के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों में गिना जाता है.

टेलीविजन हलचल

इंडिया के टॉप 1% में दिखेगा अनोखा खेल

स्टार प्लस के आगामी क्विज गेम शो इंडिया के टॉप 1% में दर्शकों को अनोखा गेम फॉर्मेट देखने को मिलेगा. शो की मेजबानी अभिनेता अनिल कपूर करेंगे. शो में 100 खिलाड़ी एक साथ खेल की शुरुआत करेंगे और प्रत्येक खिलाड़ी को शुरुआत में एक लाख रुपये दिये जाएंगे. शो के फॉर्मेट के अनुसार खिलाड़ियों को कॉमन सेंस पर आधारित 13 सवालों का सामना करना होगा. हर गलत जवाब के साथ खिलाड़ी के एक लाख रुपये में से कुछ राशि प्राइज पॉट में ट्रांसफर होती जाएगी. सभी 13 सवालों के अंत तक यह प्राइज पॉट बढ़कर एक करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है. अनिल कपूर ने शो के फॉर्मेट के बारे में कहा, 'मैं भारत का सबसे बड़ा गेम शो, 'इंडिया के टॉप 1%', लेकर आ रहा हूं. इस शो को जीतने के लिए आपको सिर्फ एक चीज की जरूरत है: कॉमन सेंस. मैं आपके सामने 13 सवाल रखूंगा और ये सभी सवाल कॉमन सेंस पर आधारित होंगे. उन्होंने कहा, 'स्टूडियो में बैठे खिलाड़ी इन सवालों के जवाब देंगे. एक या दो नहीं, बल्कि एक साथ 100 खिलाड़ी. हर खिलाड़ी को गेम की शुरुआत में एक लाख रुपये मिलेंगे. जैसे-जैसे खिलाड़ी इन 13 सवालों के गलत जवाब देते जाएंगे, उनके एक लाख रुपये में से रकम हमारे प्राइज पॉट में ट्रांसफर होती जाएगी. 13 सवालों के अंत तक यह प्राइज पॉट बढ़कर एक करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है.

सौम्या ने की जीत की मदद, घर में छिड़ गया बड़ा संग्राम

स्टार प्लस के शो 'ये फितूर तेरा' की कहानी अब एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गई है, जहां प्यार, परिवार और सही-गलत के बीच सौम्या की अग्निपरीक्षा होने वाली है. आने वाले एपिसोड में सौम्या का एक फैसला पूरे परिवार को हिलाकर रख देगा. जीत की मुश्किल घड़ी में उसका साथ देने के लिए सौम्या ऐसा कदम उठाएगी, जिसे उसके पिता अनुप बिल्कुल स्वीकार नहीं करेंगे. इसके बाद घर में जमकर हंगामा होगा और अनुप अपनी बेटी के सामने ऐसी शर्त रख देंगे, जो उसके लिए जिंदगी बदल देने वाली साबित हो सकती है. कहानी में पहले ही जीत और संजीव के बीच एक बड़ी चुनौती शुरू हो चुकी है. जीत को खुद को साबित करने के लिए परीक्षा देनी है. शर्त बेहद कड़ी है. अगर जीत परीक्षा में असफल होता है तो उसे कॉलेज के साथ-साथ शहर भी हमेशा के लिए छोड़ना होगा. वहीं अगर वह परीक्षा पास कर लेता है तो उसके रास्ते की सभी बड़ी रुकावटें दूर हो जाएंगी. यही वजह है कि जीत के लिए यह परीक्षा सिर्फ पढ़ाई की नहीं, बल्कि उसके भविष्य और अस्तित्व की लड़ाई बन गई है. परीक्षा सुबह 10 बजे शुरू होती है, लेकिन जीत के हाथ में लगी चोट उसके लिए बड़ी परेशानी बन जाती है. वह ठीक से लिख नहीं पाता. ऐसे में सौम्या को उसकी हालत देखकर चिंता होती है. सौम्या को याद आता है कि जीत ने भी मुश्किल समय में कई बार उसका साथ दिया है. वह अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनती है और जीत की मदद करने का फैसला करती है. सौम्या जीत का पेपर लिखने लगती है, लेकिन तभी उसके पिता अनुप वहां पहुंच जाते हैं.

नवाजुद्दीन सिद्दीकी की बेटी शौरा ने बटोरी सुर्खियां

बॉलीवुड अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी के नाटक 'नकाब' को अमेरिका दौरे के दौरान दर्शकों से शानदार प्रतिक्रिया मिली. इस दौरे को नवाजुद्दीन और उनकी बेटी शौरा सिद्दीकी के लिए खास माना जा रहा है. जहां नवाजुद्दीन ने अपनी दमदार प्रस्तुति से दर्शकों को प्रभावित किया, वहीं शौरा ने रंगमंच पर अपनी पहली प्रस्तुति से खूब तारीफ बटोरी. अलग-अलग शहरों में हुए कार्यक्रमों के दौरान दर्शकों ने शौरा की प्रस्तुति की जमकर सराहना की. कई दर्शकों ने उन्हें 'शो की जान' बताया, जबकि कुछ ने उनकी प्रस्तुति को शानदार और प्रभावशाली करार दिया. दर्शकों के बीच शौरा के अभिनय को लेकर खासा उत्साह देखने को मिला.

पूरे दौरे के दौरान शौरा की तारीफ का सिलसिला जारी रहा. एक दर्शक ने कहा कि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया, जबकि दूसरे ने कहा कि वे शौरा को और देखना चाहते थे. उनकी पहली रंगमंचीय प्रस्तुति को लेकर दर्शकों ने गर्व और खुशी भी जाहिर की.

शौरा के लिए यह रंगमंच की दुनिया में एक महत्वपूर्ण शुरुआत रही. वहीं, नवाजुद्दीन के लिए भी यह दौरा यादगार अनुभव बन गया. पिता-बेटी की जोड़ी को एक साथ मंच पर देखने का मौका दर्शकों के लिए भी खास रहा. अपने अमेरिका दौरे के अनुभव को साझा करते हुए नवाजुद्दीन ने इंस्टाग्राम पर लिखा, 'यह एक शानदार अनुभव रहा है. इस सफर में मैंने बहुत कुछ सीखा और खोजा.

लोगों के इतने प्यार और हमारे शो को सफल बनाने के लिए मैं हमेशा शुक्रगुजार रहूंगा. हमारी टीम से जुड़े सभी लोगों को बहुत-बहुत धन्यवाद. नवाजुद्दीन की दमदार रंगमंचीय प्रस्तुति और शौरा की शानदार शुरुआत ने 'नकाब' को यादगार बना दिया. अमेरिका में दर्शकों से मिली सराहना ने पिता-बेटी की इस जोड़ी के लिए इस सफर को और खास बना दिया है.

सोशल मीडिया पर छाए रवि किशन के मीम्स

भोजपुरी सिनेमा से लेकर बॉलीवुड और राजनीति तक अपनी अलग पहचान बनाने वाले रवि किशन इन दिनों एक अलग ही वजह से चर्चा में हैं. भाजपा सांसद और अभिनेता रवि किशन की फिल्मों या राजनीतिक बयानों से ज्यादा सोशल मीडिया पर उनके पुराने और नए वीडियो के छोटे-छोटे हिस्से वायरल हो रहे हैं. उनकी बोलने की खास शैली, संवाद अदायगी और बेबाक अंदाज अब इंटरनेट पर मीम बनाने वालों के लिए पसंदीदा सामग्री बन चुके हैं. पॉडकास्ट और साक्षात्कार में कही गई उनकी कई बातें सोशल मीडिया पर पहुंचते ही मीम में बदल जाती हैं. 'जल्दी द लेट' और 'मनी फॉलोज माय ब्रदर' जैसे रवि किशन के संवादों को लेकर यूजर्स तरह-तरह के मजेदार वीडियो बना रहे हैं. कोई उनकी आवाज और अंदाज को दूसरे वीडियो पर इस्तेमाल कर रहा है तो कोई उनके संवादों को रोजमर्रा की स्थितियों से जोड़कर मजेदार मीम तैयार कर रहा है. देखते ही देखते रवि किशन की पुरानी क्लिप भी नए संदर्भ में फिर से वायरल होने लगी हैं. इस पूरे मीम ट्रेंड पर अब खुद रवि किशन ने खुलकर बात की है. उन्होंने बताया कि जब उन्हें महसूस हुआ कि उनकी कही हुई लगभग हर बात सोशल मीडिया पर मीम का रूप ले रही है, तो उन्होंने कुछ समय के लिए चुप रहने का फैसला किया.

वीर पहाड़िया की 'प्रेम कीटाणु' गांधी जयंती पर होगी रिलीज

फिल्म 'स्काई फोर्स' से बॉलीवुड में पदार्पण करने वाले अभिनेता वीर पहाड़िया अब फिल्म 'प्रेम कीटाणु' में नजर आएंगे. फिल्म में वीर पहाड़िया के साथ अपारशक्ति खुराना, आफिया सैयद, राकेश बेदी और निखिल विजय भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं. 'प्रेम कीटाणु' का निर्देशन अपूर्व सिंह कार्की ने किया है, जो 'सिर्फ एक बंदा काफी है' और चर्चित सीरीज 'एस्पिरेंट्स' के लिए जाने जाते हैं.

यह गौरव वर्मा के नए बैनर अवनिका फिल्म्स की पहली फिल्म है, जिसे फार्स फिल्म्स के साथ मिलकर प्रस्तुत किया जा रहा है.

युवाओं की आकांक्षाओं, रिश्तों और रोजमर्रा की चुनौतियों पर आधारित यह फिल्म हास्य और भावनाओं से भरपूर मनोरंजक कहानी के रूप में पेश की जाएगी. फिल्म में आधुनिक जीवन और प्रेम को एक नए नजरिए से दिखाने का प्रयास किया गया है. 'स्काई फोर्स' में भारतीय वायुसेना के अधिकारी टी. विजया की भूमिका निभाने के बाद वीर पहाड़िया अब बिल्कुल अलग अंदाज में नजर आएंगे. देशभक्ति और एक्शन से भरपूर ड्रामा के बाद युवा और रिश्तों पर आधारित फिल्म का हिस्सा बनना उनके अलग-अलग किरदारों और जॉनर को तलाशने की कोशिश को दर्शाता है.

नानी की 'द पैराडाइज' के लिए तैयार विशाल झुग्गी सेट

नेचुरल स्टार नानी की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'द पैराडाइज' को लेकर दर्शकों में जबरदस्त उत्साह है. नानी और निर्देशक श्रीकांत ओडेला की यह बहुप्रतीक्षित रीयूनियन है. फिल्म में नानी बिल्कुल अलग अवतार में नजर आने वाले हैं. फिल्म का टीजर पहले ही रिलीज हो चुका है, जिसे दर्शकों की शानदार प्रतिक्रिया मिली है.

टीजर में दमदार एक्शन, पावरफुल थीम और फिल्म के भव्य सेट की झलक देखने को मिली है. फिल्म से जुड़े एक स्वतंत्र सूत्र के अनुसार , 'द पैराडाइज' के निर्माताओं ने कई एकड़ में फैला विशाल सेट तैयार किया है. इसके लिए लोकेशन तलाशने में कई महीने लगे, क्योंकि किसी भी स्टूडियो के पास इतने बड़े सेट के निर्माण के लिए पर्याप्त जमीन नहीं थी.

सूत्र ने बताया कि निर्माताओं की कोशिश थी कि फिल्म में दिखाई जाने वाली झुग्गियां अधिक से अधिक वास्तविक और प्राकृतिक नजर आएं. इसके लिए विशेषज्ञों की मदद ली गई और उन्हें भारत की अलग-अलग झुग्गी बस्तियों में भेजा गया, जिससे वहां के माहौल और बारीकियों को करीब से समझा जा सके. पूरे सेट का केंद्रबिंदु एक विशाल आर्च है, जो फिल्म के मुख्य किरदार का घर भी है. इसी आर्च के आसपास पूरी झुग्गी बस्ती का निर्माण किया गया है.

फिल्म में नानी की मौजूदगी वाला गीत 'आया शेर' भी दर्शकों के बीच लोकप्रिय हो चुका है. गाने के हुक स्टेप को प्रशंसक रीक्रिएट कर रहे हैं और सोशल मीडिया पर इससे जुड़े कई रील्स और एडिट्स साझा किए जा रहे हैं. एसएलवी सिनेमाज के बैनर तले बनी 'द पैराडाइज' 21 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी.